श्री परमात्मने नमः ॥

पौषध ।

धर्म की "पुष्टि को" जो धारन करे उसे पोषध कहना, श्रावक के १२ व्रत में यह ११ वां व्रत है, अष्टमी चतुर्दशी वगैरः पर्व तिथि में १२ घंटे का दिन का रात का वा २४ घंटे का दिन रात का होता है उस पोषध के ४ भेद हैं :

(१) आहार पोषध—तप में उपवास वा आंबील वा नीवी वा एकाशना करना ।

(२) शरीर सत्कार पोषध—स्नान विलेपन आदि विभुषा न करनी ।

(३) ब्रह्मचर्य पोषध—स्व स्त्री में भी ब्रह्मचर्य पालना ।

(४) अव्यापारं पोषध–घर का वा बाहर का सावद्य व्यौपार छोड़ना ।

इन चारों मे देश (थोड़ा) और सर्व (संपूर्ण) के भेद से मुख्य आठ भेद होवे और संयोगी ८० भेद होवे । परंतु

पूर्वाचार्य की परंपरा से इस सम य सिर्फ आहार में देश और सर्व का भेद है अर्थात् चौविहार उपवास सर्व से हैं और तिविहार उपवास आंबील आदि देश से है बाकी तीन सर्व से होता है रात का पोपध करे उसे भी दिन में उपवास वगैरह एकाशना तक कुछ तप करना चाहिये।

पोसह करने वाले को प्रथम राइ प्रतिक्रमण करना, विधि जानने वाले पडिलेहण और देववंदन साथ करते हैं (पोपध लिये पहले देववांदे तो सभाय पोपध उचरे बाद करनी) पीछे जिन मंदिर मे जाकर पूजाकर उपाश्रय मे आकर पोपध उचरना इस समय यह प्रवृति है, किंतु प्रतिक्रमण कर तुरत भी पोपध उचर सके हैं और पडिलेहण कर देववांद के सभाय करनी।

पौषध लेने की विधि।

प्रथम खमासमण देकर इरियावही और प्रकट लोगस्स तक क्रिया करके इच्छा. संदि० भ० पोसह मु० पडिलेहु? इच्छं, मु० पडिलेहण कर खमा० इ० सं० भ० पोसह संदिसाहुं? इच्छं, खमा०इ सं० भ० पो ठाउं? इच्छं, हाथ जोड नवकार गिन बोलेकि इच्छकारी भगवन् पसाय करी पोसहदंड उच्चरावोजी।

गुरु वा वड़ा श्रावक पाठ पढे ।

करेमिभंते पोसहं आहार पोसहं देसओ सव्वओ, सरीर सक्कार पोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसहं सव्वओ, अव्वावार पोसहं सव्वओ, चउव्विहे पोसहं ठामि ।

* जावदिवसं (अहोरत्तं) पज्जु वासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

भावार्थ–अरिहंत की साक्षी से गुरु सामने पच्चक्खाण करता हूं कि उपवास वा कुछ तप करूंगा, स्नानादि न करूंगा, ब्रह्मचर्य पालूंगा, घर का वा कोई भी पाप व्योपार न करूंगा मन वचन काया से पाप न करूं न करावुं, भूल से हो जावे तो निंदा गर्हा करूं आत्मा को पाप से बचाउं ।

खमा० देकर इच्छा० सामा० मुहु० पडिलेहुं? इच्छं मु० पडि० खमा० इ-सं-भ० सामा० संदि० इच्छं खमा० इ-स-भ० सामा० ठाउं ।

---

* फक्त रात का पोसह लेना हो तो जाव शेषदिवस रत्तं कहना, सिर्फ दिनका हो तो जाव दिवसं कहना, दिन रात का हो तो जाव अहोरत्तं कहना ।

इच्छं—दो हाथ जोड़ नवकारगण इ० भ० पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी गुरू वा वड़ा श्रावक वोले।

करे भिमंते का पाठ उचरना परंतु जाव नियम के वदल जाव पोस हं वोलना, खमा० इ- सं- भ- वेसणे- सं- खमा० इ० सं. भ. वेसणे ठाउं ? खमा० इ-सं-भ० सझाय सं. खमा० ई. सं. भ. स. करुं तीननवकारगिन खमा. इ- सं. भ० वहुवेल संदि- खमा- इ- सं-वहु वेल करस्सुं।

पडिलेहण ॥

खमा इरियावही कर मुहुपत्ति चरवला आसन. धोती और सूत का कंदोरा इन पांच की पडिलेहण करनी।

खमा— इ. भ. पसायकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी वड़ों का एक वस्त्र उत्तरासंग पडिलेहना खमा० इ-सं-भ-उपधि मुहुपत्ति पडिलेहुं? मुह-पडिलेह के, खमा- इ. सं. भ. उपधि संदि-इच्छं, खमा-इ. सं. भ.उपधि पडिलेहुं कह कर कामली, मात्रा करने की धोती वगेरह पडिलेहना और एक आदमी से डंडासण की याचनाकर काजा लेकर वहां खडा रह कर इरियाव ही स्थापना जीके सामने करना पीछे जगह देख काजा देख अणु जाणह जस्सग्गो, कह कर परठवना, पीछे तीन वार, वोसिरे

बोलना काजा में सचित दाना निकले तो गुरु को कहना कीडी वगैरह हो तो यतना से रखना।

जो प्रतिक्रमण के साथ वा पोषध लिये पहिले पडिलेहण करना हो तो खमा– इरियावही कर इ. सं. भ. पडिलेहण करूं, कह कर सभी वस्त्रों की साथ पडिलेहण करलेनी. और काजा लेकर देखकर विधि अनुसार परठवदेना, पीछे इरियाव ही कर लेना. पीछे पोषध में पडिलेहण न करनी अविधिका मिच्छामिदुक्कडं देकर देव वांदना और सझाय करनी

राइप्रतिक्रमण।

राइ पडिक्कमण कर पोषध लेना, पर पहिले न किया होतो पोषध लेकर देव वांदने पहिले राइ पडिक्कमण कर लेना, राइ पडिक्कमण में सात लाख की जगह गमणा गमणेका पाठ बोलना।

इर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति आदान भंड मत्त निक्खेवणा समिति, पारिष्ठापनिका समिति मन गुप्ति वचन गुप्ति काय गुप्ति इन पांच समिति और तीन गुप्ति ये आठ प्रवचन माता में जो कुछ खंडन विराधना हुई हो वो सब मन वचन काया कर मिच्छामिदुक्कडं।

पडिकमणा में जाव नियम के वदले पोसहं बोलना प्रति-क्रमण हो जाने वाद अतिमचार खमासमण देने पहिले खमा इ- सं. भ. बहु वेल सं दिसा हु, खमा० इ-सं-भ- बहुवेल करसुं-चार खमासमण देना, अढाइज्जे सु, बोल-समय होतो सीमंधर स्वामी का और सिद्धाचलजी का चेत्य वंदन करना

बडे देव वांदने की विधि ।

इरियावही काउसग कर उत्तरा सण कंधे पर डाल खमा०इ- सं- भ- चैत्य वंदन करुं इच्छं चेत्य वंदन जंकिंचि न मुत्थुणं जयवीयरायआधा (आभवमखंडातक) फिर चैत्य वंदन जंकिंचिनमु. और चे. एक थोय इस तरह सिद्धाणं बुद्धाणं तक चार थुई कह कर नमुत्थुणं कहकर फिर चार थुई नमुत्थुणं दो जावंति उवसग्गहरं वा कोइ भी स्तवन आधा जयवीयराय खमा० चैत्य, जं, नमु, जय वीय राय पूरा कह कर अविधि हुई हो उसका मिच्छामि दुक्कडं देकर, प्रभात के देव वंदन में आखीर में एक सज्झाय कहना (दु प्रहर व शाम को नहीं कहना) उस सज्झाय के वास्ते एक खमा देकर उच्छा० सज्झाय करूं ! इच्छं कह कर नवकार मंत्र पढकर दो पैर पर वैठ कर एक शख्स मन्हाजिणाणं की सज्झाय कहे (वादमें नवकार नहीं गिनना)

श्री मन्हजिणाण की सज्झाय ॥

मन्ह जिणाणं आणं, मिच्छं परिहर धर सम्मत्तं ॥
छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होई पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ॥
सज्झाय नमुकारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिण पूजा जिणथुणिणं, गुरुथुअ साहम्मि आणवच्छलं ॥
ववहारस्य सुद्धि, रहजुत्ता तित्थजुत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेक संवर, भासा समिइ छ जीव करुणाय ॥
धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरण परिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरी वहुमाणो, पुत्थय लिहणं पभावणा तित्थे ॥
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥

मुझे जिनवर की आज्ञा प्रमाण है. मिथ्यात्व का त्याग और सम्यक् त्व का ग्रहण और रोज छे आवश्यक (प्रति क्रमण) करना पर्व दिनों में पोषध करना दान देना, शील पालना, तप करना निर्मल भाव रखना, पठन पाठन करना, नव कार का जाप, परोपकार और यतना से विचार पूर्वक कार्य करना, जिन पूजा, जिनेश्वर की स्तुति, गुरु वंदन, स्व-धर्मी बंधुओं पर प्रेम रख उनकी उन्नति करना, नीति से वर्तन

रथ यात्रा, तीर्थ यात्रा से महिमा बढ़ानी क्रोध की शांति, विवेक, संवर, भाषा समिति, और छकाय के जीवों की रक्षा यथा योग्य करना, धर्मी पुरुषों का संसर्ग, इंद्रियों का दमन चारित्र की भावना संघ ऊपर बहुमान, पुस्तक का लिखना तीर्थ की प्रभावना ये रोज के कर्त्तव्य गुरु के उपदेश से जानना। और करना।

अब छे घड़ी दिन चढने के बाद पोरसी पढ़ाने की विधि ॥

प्रथम खमा० इच्छा० बहु पडिपुन्ना पोरिसि ? कह कर दूसरा खमा० देकर इरियावही पडिक्कमना बाद में खमा० देकर इच्छा० पडिलेहण करुं ? इच्छं कह कर मुहपत्ति पडिलेहना।

तत्पश्चात् गुरु होवे तो उनकी समक्ष राइ मुहपत्ति पडिलेहना इसकी विधि इस प्रकार है.

प्रथम खमा० देकर इरियावही पडिक्कमना बाद में खमा० देकर इच्छा० राइयं आलोउं ? इच्छं कह कर उसका पाठ कहना पीछे सव्वस्सवि राइयं० कह कर पन्यास होवे तो दो वंदना करना, पन्यास न होवे तो एक खमा समण ही देना। पीछे इच्छ कारी सुहराई कह कर अब्भुट्ठि ओहं खमा-

वना, दो वंदना करना पीछे "इच्छकारी भगवन् पसाग कर पच्चक्खवाण का आदेश दीजिये जी" इस प्रकार कह कर पच्चखाण करना प्रभात में गुरु के साथ प्रतिक्रमण किया हो तो राइ मुहुपति न पडिलेहनी ।

पीछे सर्व मुनिराजों को दो खमासमण, इच्छकारी तथा अभ्युट्ठि ओहं के पाठ पूर्वक वंदन करना ।

तत्पश्चात् लघुशंका करने जाने के लिये कुंडी, पुंजणी और अचित्त जल की याचना कर लेना ।

मात्रा करने के लिये अथवा कारण वशात् जब कभी उपाश्रय में से बहार जाने की जरूरत हो तब तीन दफे "आवस्सही" कहना और भीतर प्रवेश करते समय तीन दफे निसिहि कहना ।

मात्रा करने के लिये जाना हो तो प्रथम मात्रा का इलाहिदा वस्त्र पहन कर कुंडी पुजणी से पोंज कर उसमें मात्रा करके परठवने की जगा में प्रथम कुंडी नीचे रख कर निर्जीव भूमि देख कर "अणुजाणह जस्सग्गो" कह कर मात्रा परठवना बाद में कुंडी रखकर तीन दफे "वोसिरे" कह कर कुंडी जहां से ली हो वहीं रख देना और अचित्त जल से हाथ

धोकर वस्त्र बदल कर स्थापना सन्मुख आना और खमासमण देकर इरियावहो पडिक्कमना ।

पोषध लेने के बाद जिन मंदिर में दर्शन करने के लिये अवश्य जाना चाहिये, न जावे तो आलोयण आवे इसलिये कटासणा बांये खांधे पर रख, उत्तरासण कर, चरवळा बांयी बगल में और मुंहपति जिवणे हाथ में रख कर इरियासमिति शोधते हुए मुख्य जिन मंदिर में जाना वहां तीन दफे निसिही कह कर देरासरके आद्य द्वार में प्रवेश करना. प्रथम मूलनायकजीकी सन्मुख जाकर दूर से प्रणाम कर तीन प्रदक्षिणा देना पीछे रंग मंडप में प्रवेश करके दर्शन स्तुति करना एक खमासमण देकर इरियावही पडिक्कमना बाद तीन खमासमणा दे निसिहि कह कर विधि से चैत्य बंदन करना, जिनमंदिर से बाहर निकलते समय तीन वक्त आवस्सही कह कर उपाश्रय में आना और तीन दफे निसिही कह कर प्रवेश करना और सो कदम से अधिक दूर गये होवे तो इरियावही पडिक्कमना ।

चौमासा का काजा ।

यदि चोमासे की ऋतु होतो मध्याह्न के देववंदन के पहिले दूसरी वक्त काजा लेना चाहिये अतः एक शख्स को इरियावही

पडिक्कम के काजा लेना चाहिये और उसे शुद्ध कर योग्य स्थान पर परट देना चाहिये (तत्पश्चात् इरियावही नहीं पडिक्कमना) ।

तत्पश्चात् मध्याह्न के देववंदन पूर्वोक्त विधिपूर्वक करना । बाद जिसको चउविहार उपवास न होवे वो निम्नलिखित विधि अनुसार पच्चखाण पारे ।

पच्चक्खाण पारने की विधि ।

प्रथम खमा० देकर इरियावही पडिक्कमना यावत् लोगस्स कह कर खमा० इच्छा० चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कह कर जगचिंतामणि का चैत्य वंदन जयवीयराय सम्पूर्ण तक करना (स्तवन उवसग्ग हर का कहना) बाद में खमा० इच्छा० सज्झाय करुं इच्छं कह एक नवकार गिनकर मन्हजिणाणं की सज्झाय कहना पीछे खमा० इच्छा० मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कह कर मुहपत्ति पडिलेहना पीछे खमा० इच्छा० पच्चखाण पारूं ? यथाशक्ति कह कर खमा० इच्छा० पच्चखाण पारा. तहत्ति कह जिवणा हाथकी मुष्टि करके चरवला उपर स्थापित कर एक नवकार पढकर जो पच्चखाण किया हो वह नाम देकर निम्नोक्त प्रकार पारना । दुपरहके (देववंदन किये विना पोषध में पच्चक्खाण न पार सके) ।

उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसि साढ पोरिसि सूरे उग्गए पुरिमड्ढ मुट्ठिसहिअं पच्चखाण किया चउविहार, आंबील, नीवी, एकासणा किया तिविहार, पचखाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तिरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जंच न आराहिअं तस्स मिच्छामिदुक्कडं" पीछे एक नवकार गिनना।

तिविहार उपवास वाले को निम्नोक्त प्रकार सूरे उग्गए उपवास किया तिविहार, पोरिसि साढ पोरिसि पुरिमड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाण किया पाणहार, पच्चक्खाण फासिअं पालिअं, सोहिअं, तिरिअं, किट्टिअं, आराहिअं जंचन आराहिअं तस्स मिच्छामिदुक्कडं (चउ विहार उपवास वाले को पच्चक्खाण पारने की बिलकुल विधि करने की नहीं है)

प्रत्येक पच्चखाण पालते हुए अंत में एक नवकार मंत्र बोलना चाहिये।

पानी पीने वा खाने की विधि।

जल पीना होतो याचना किया हुआ अचित्त जल स्थासण पर बैठ कर पानी पीए, बाद पीए हुए पात्रको पोंछ कर रक्खे पानी वाले पात्र को खुले न रक्खे।

यदि आंबिल, नीवी या एकासणा करने के लिए अपने घरको जाने की जरुर होतो इर्यासमिति शोधते हुए जाना और घर मै प्रवेश करते हुए " जयणा मंगल " बोल कर आसन डाल कर बैठना और स्थापना स्थापित करके इरियावही पडिक्कमना पिछे खमा० देकर गमणा गमणे आलोवना पीछे काजा लेकर पाटा, थाली आदि भाजन तथा मुखकी प्रमार्जना करके (पोंजकर) स्थिर बैठ भोजन करे खाते समय बोलना नहीं, और अपने लिये नया स्वादिष्ट भोजन न बनवावे, तथा विना रोग स्वादिमकी वस्तु न ले, मुख शुद्ध कर तिविहार का पच्चक्खाण करे पीछे पोषध शाला में आकर जगचिंतामणी का चैत्य वंदन पूरा करना ।

तीसरा पहर की पडिलेहण की विधि ।

स्थापनाचार्य की पडिलेहणा करे बाद प्रथम खमा० इ० सं. भ. "बहु पडिपुन्नापोरिसी" ? बोल, खमा० इरियावही कर खमा० इ-सं-भ०गमणा गमणे आलोउं ? इच्छं गमणा गमणे का पाठ बोल, खमा० इ-सं-भ०पडिलेहण करुं ? इच्छं खमा० इ- सं- भ- पोसह शाला की प्रर्माजना करुं ? इच्छं—उपवास वाले को मुहुपत्ति चरवला आसन तीन चीज को और खाने

वाले की धोती के दोरा मिल पांच की पडिलेहण करनी खमा० इ- सं- भ- पसाय करके पडिलेहण पडिलेहावोजी- कहकर बड़ों का एक वस्त्र पडिलेहना खमा० इ- सं- भ- उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं खमा० इ- सं- भ- सज्झाय करु ! दो पग पर बैठ मन्हजिणाणं की सज्झाय करनी, पीछे खाया हो तो दो वांदना देकर पाणपार (पानी पीना होतो मुट्ठि सहियं) का पच्चक्खाण करना चउविहार उपवास वाले को पच्चक्खाण नहीं करनी) तिविहार उपवास वाले को वांदणा न देनीं सिर्फ मुहपत्ति ही पडिलेहना, प्रभात में तिविहार उपवास का पच्चखाण किया हो और पानी न पीया हो तो इस समय चउविहार उपवास का पच्चखाण करना पच्चखाण करे बाद सबको खमा इच्छा सं' भ- उपधि संदिसाहुं ! खमा० इ- सं- भ- उपधि पडिलेहुं रात को सोने में जो खप लगे उन सब वस्त्रों की पडिलेहण करनी रात्रि पोषध करने वाला प्रथम कामली और पीछे सब वस्त्रों का पडिले हण कर पीछे विधि अनुसार काजा ले परठवना जो मुट्ठि सहियं, का पच्चक्खाण किया हो तो मुट्ठी बंधकर तीन नवकार गिन मुट्ठी खोल पच्चक्खाण पार कर पानी पीना देव वंदन करना और देवसि प्रति क्रम करना।

पोसह जो दिन का लिया हो तो देवसि प्रतिक्रमण करके सामायिक पारने पहिले पारना- विधि खमा- देकर इरियाव ही काउसग्ग कर चउकसाय से विधि पूर्वक जय वीयराय तक कह कर पारने को मुहपत्ति पडिलेहना खमा० इ- सं- भ- पोसह पारुं ? यथा शक्ति कहकर खमा० इ- सं- भ पोसह पारा तहत्ति कहना. एक नवकार गिन जिमणा हाथ चरवला पर रख मस्तक नमाकर सागर चदो पढ़े।

सागर चंदो कामो, चंद व डिंसो सुदं सणो धन्नो।
जे सिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीवियंते वि ॥ १ ॥
धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदे वाय।
जे सिप ससइ भयवं दढ व्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥

भावार्थः- सागरचंद्र, कामजीनाम श्रावक, चंद्रावतसंक, राजा सुदर्शन सेठ आदि जीवित पर्यंत पौषध (पोसह) व्रत की प्रतिमा (नियम) अच्छी तरह पाली और सुलसा श्रावकका आनंद और कामदेव श्रावक, आदि प्रशंसनीय और धन्यवाद योग्य है जिनकी प्रशंसा स्वयं महावीर प्रभु ने की है।

पोसह विधि से लिया विधि से पारा, विधि करते जो अविधि हुआ हो वो सब का मन वंचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

पीछे सामायिक पार ने को खमा० देकर इ- सं- भ- मुहुपत्ति पडिलेहुं पीछे खमा० इ- सं- भ- सामायिक पारुं ! यथा शक्ति खमा० इ- सं- भ- सामायिक पारा, तहति चरवला पर हाथ रख " सामाइअ वयजुत्तो " का पाठ पढ़ना. पीछे अविधि का मिच्छामि दुक्कडं देना।

पोषध पारते पहिले डंडासण कुंडी वगैरह जो चीज ली हो वो दूसरे पोषध वाले वा छूटे श्रावक को देकर पारना।

रात को मात्रा वा टट्टी जाना पडे तो जगह देख लेनी. और २४ बोले गुरु वा बड़ों के सामने एक वा सभी बोले.

जहां सोना हो वहां बोले।

(१)	आघाड़े	आसन्ने	उच्चारे	पासवणे	अणहियासे
(२)	"		"	"	"
(३)	आघाड़े	मज्झे	उच्चारे	"	"
(४)	"	"	"	"	"
(५)	आघाडे	दूरे	उच्चारे	"	"
(६)	"		"	"	"

एसे ही छेउ पाश्रय की दरवाजेके भीतर अहियासे शब्द लगाकर बोलना

ऐसे ही छे उपाश्रयके बाहर बोलना. वहांपर "अणाघाडे उच्चारे पासवणे अणाहिया से" और सो कदम दूर जाकर बोलना. पर "अहियासे" बोलना।

भावार्थ यह है कि शरीर की अशक्ति से वहां भी टट्टी जाना पड़े पेशाव परठवना पड़े तो दोष न लगे।

यह क्रिया देवसि प्रतिक्रमण किये पहले कर लेना उसे मांडला कहते है।

प्रभात में दिनका पोषध किया हो वो रातको फिर करना चाहे तो इरियावही काउसग्ग वगैरह सब कर "सज्झाय करुं? वहां पर बोलना कि मैं सझाय में हूं. और तीनके बदल एक नवकार गिनना, और पीछे बहुवेल संदिसाहुं, बहुवेल करसुं, पडिलेहण करे. मांडला प्रतिक्रमण भी करे॥

फक्त रात्रि पोसह करने की विधि.

रात्रि पोसह करने वाले को पडिलेहण देववंदन करना होगा इस लिये एकाशनादि का तप कर दिन छते जल्दी आकर क्रिया करके पोसह प्रभातकी विधि से उचरना.

पाठ "जाव शेष दिवसंरत्तं" उचरना.

रात्रि पोसह वाले प्रतिक्रमण करे और छे घडी (२॥ घंटे) रात जाने तक पढे गुणे, जाप करे, पीछे संथारा पोरसी

पढने को खमा० इ-सं-भ· "वहु पडी पुन्ना पोरिसि राइ संथार-ए ठाउं" इरियावही काउसग्ग पीछे खमा० चउ कसाय चैत्य वंदन जय वीयराय तक कह कर खमा० इ-सं भ-राइ संथारा मुहपति पडिलेहुं इ-सं-भगवन राइ सं. संदिसाहुं ? पीछे नि-सिही ३ वार बोल नमो खमा समणाणं गोयमाइणं महा मुणीणं, नवकार करोमिभंते बोलना ऐसा तीन वक्त बोले बाद नमस्कार हो गौतम इंद्र भूति आदि महा मुनिओंको जो क्षमा में प्रधान है ॥

संथारा पोरिसि ।

अणु जाणह जिट्ठिजा ठिज्जा, अणुजाणह परम गुरु, गुरुगुण रय णेहिं मंडिय सरीरा ।

वहु पडि पुन्ना पोरिसि, रा इ अ संथार ए ठामि ॥ १ ॥
अणु जाणह संथारं, वाहु वहाणेण वामपासेणं ।
कुक्कुडिपाय पसारेण, अंत रंत पमज्जए भूमि ॥ २ ॥
संको·इ अ संडासा, उव ट्टंते य काय पडिलेहा ।
दव्वा इ उव ओगं, ऊसास निरुंभणा लोए ॥ ३ ॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ।
आहार मुव हि देहं, सव्वं तिविहे ण वो सिरिअं ॥ ४ ॥

हे भगवन् गुरो ! आप मुझे इच्छा से आज्ञा दो, पोरिसि पढाने का समय हुआ है और मै संथारा करुं, आप गुण रत्नो से भरा हुआ शरीर धारी है । संथारा मे एक उन वस्त्र एक सूत का वस्त्र (संथारिया और उत्तर पटा) बिछाकर उस पर बैठ पढे । माथा नीचे कपडा के बदल भूजा (बाहु) रखे, और मुरगी की तरह पेर आकाश तरफ रख सुए परंतु शक्ति ऐसी न हो तो पेर लंबे करे वा संकोचे तब चरवले से पूंज इधर उधर करे. पासा फिराना हो तो भी संथारा और शरीर चरवले से पूंज फिरावे ।

मात्रा करने वा कार्य वश उठना हो तो विधि.

इधर उधर गिर दूसरों को दुख न दे इस लिए रात में कुछ भी कारण से उठना हो तो प्रथम नाक दबा कर श्वास रुंध जागृत हो कर विचारे कि मैं कहां हूं ? यहां पर और कौन है ? वे कहां सोते हैं ? मैं कहां जाता हूं दरवाजा कहां है ? वो सब विचार, डंडासण से पूंजता जावे ।

अंत काल की विधि ।

शरीर का भरोसा नहीं इस लिये सोती समय मन में विचारे कि मुझे इस दुनियां में फिर जन्म न लेना पडे न मम

त्व रहवे इस लिये चार आहार उपधि और शरीर सबका ममत्व छोड़ देना जो जीता रहुं तो फिर ग्रहण करुं नहीं तो त्याग करके सोता हुं ऐसी भावना रखे कि उन सब को मन वचन काया से वोसिराता हुं ।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं ।
साहूमंगलं, केवलिपन्नतो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा।
साहुलोगुत्तमा केवलि पन्नतोधम्मोलोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारिसरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि ।
सिद्धे " " साहू " " ॥
केवलि पन्नतं धम्मं " " ॥७॥

जो इस लोक में और परलोक में कल्याण करने वाले हैं उनके नाम. १ अरिहंत २ सिद्ध ३ साधु और ४ केवलिभाषित धर्म. यही चार लोगों में उत्तम है, मैं उन्हीं चारों का शरण लेता हूं.

पाणाइवायमलियं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं ।
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहादोषं ॥८॥
कलहं अप्भक्खाणं पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं ।
परपरिवायं माया-मोसं, मिच्छ त्तसल्लं च ॥९॥

जीव हिंसा, झूट, चोरी, मैथुन, परिग्रह, क्रोध मान माया लोभ प्रेम. तथा द्वेष, क्लेश, झूठाकलंक, चुगली, रतिअरति, परपरिवाद, माया मृषा, मिथ्यात्व शल्य ये अठारह पाप स्थान हैं।

वोसिरिसु इमाइं, मुक्ख मग्ग संसग्ग विग्घ भूआइं।
दुग्गइ निबंधणाइं, अट्ठारस पाव ठाणाइं ॥१०॥

ये अठारहों भी पाप मुक्ति में विघ्न करने वाले हैं और दुर्गति में लेजाने वाले हैं इसलिये उनको छोड़ना चाहिये।

एगो हंनत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ।
एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणु सासइ ॥ ११ ॥
एगो मे सास ओ अप्पा, नाण दंसण संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे सं जोग लक्खणा ॥ १२ ॥
संजोग मूला जीवेण, पत्ता दुक्ख परंपरा।
तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥

रात को सोवे उस वक्त मन में चिंतवना करे कि मैं एकिला हूं मेरा कोई नहीं है, न मैं किसी का हूं इस तरह अदीन मन से अपने आप आत्मा को शिक्षा देवे, (औरत बेटे धन शरीर मेरा कुछ भी नहीं है) मेरा आत्मा कभी मरता

नहीं है, ज्ञान दर्शन युक्त है और बाकी सब मेरे से भिन्न है यह सब कर्म संबंध से जुडा है।

वो प्रत्यक्ष दीखता है और मेरे नहीं होने पर भी मैं अपना मान रहा हूं जिससे मुझे बहुत काल से दुःख भोगने पड़ते हैं अब मैं समझा हूं इस लिये मन वचन काया से उन पर राग द्वेष करना छोडता हूं।

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिण पन्न त्तं त त्तं, इ अ समत्तं मएगहियं ॥ १४ ॥

अरिहंत प्रभु धर्मोपदेशक होनेसे मेरे देव हैं और पंच महा व्रत पालने वाले हित शिक्षक सुसाधु मेरे गुरु हैं और जीव अजीवादि नव तत्व का यथोचित स्वरूप बताने वाला जिनेश्वर भाषित वचन मेरे तत्व हैं ऐसा व्यवहार और आत्म रमणता रूप निश्चय सम्यकृत्व मैंने ग्रहण किया है।

१४ वी गाथा तीनवार पढ श्रावक ७ नवकार (साधु जी इस पोरसी के पाठमें तीन नवकार) गिने और पीछे तीन गाथा पढे।

खमिअ खमाविअ मइ, खमिय सव्वह जीव निकाय।
सिद्धह साख आलोयणह, मुझ्झह वइरनभाव ॥ १५ ॥

मैंने सब जीव के अपराध क्षमा किये, और सब जीवः के पास क्षमा जाहता हूं, और सिद्ध भगवान के सामने आलोचना करता हूं, कि मेरे कोई भी जीव के साथ द्वेष भाव नहीं हैं।

सव्वेजीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत।
ते मे सव्व समाविश्रा मुज्ज वितेह खमंत ॥ १६ ॥
ज जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासियं पावं।
जंजं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १७ ॥

सब जीव कर्माधीन होकर चौदह राज लोक में भटकते हैं उन सबको मैंने खमाये हैं, वे सब मुझे क्षमा करें जो जो कर्म मन से वांधे हों जो जो पाप वचन से कहा हो जो जो (पाप) काया से किये हों उन सब का मिथ्या दुष्कृत देता हुं।

पोषध मे प्रभात का प्रति क्रमण की विधि

प्रभात में जागृत होकर नवकार मंत्र संभारे और पीछे मात्रासे निवृत्त होकर हाथ चूनेके पानीसे धोकर इरियावही कर एक लोगस्स का काउसग्ग कर प्रगट लोगस्स कह कर खमा० देकर कुसुमिण दुसुमिण का चार लोगस्स का काउसग्ग करे और पूर्व कथित विधि अनुसार प्रतिक्रमण करे—कल्याण कंद

की चार थुई होनें पश्चात् नमुत्थुणं कहकर वहुवेल संदिसाहुं-वहुवेल करसूं, दो खमासणा देकर बोलना चाहिये पीछे चार खमासणा देकर भगवानादि को नमस्कार करना और पीछे अढाई जेसु बोलना सीमंधर स्वामी का और सिद्धाचल जी का स्तवन बोलकर पडिलेहना करना फिर देव वंदन कर सज्झाय करे पीछे डंडासन कुंडी पानी कुंडल, कमली वगैरः जो वस्तु दूसरों से ली है वह पीछी दे देवें पोषधशाला की वस्तु यथोचित स्थान पर रखे और फिर इरियावही का का-उसग्ग कर पोषध करने की विधि अनुसार पारले. रात को जो चउकसाय का चैत्यवंदन कहते हैं वह प्रभात के पोषध में नहीं बोलना पोषध पार के सामायिक पार लेना।

पोषध दूसरा लेना हो तो पारे विना दूसरा उचर लेना, और जो वस्तु चाहिये वो याचना कर लेनी।

पोषध में स्थंडिल (टट्टी) की विधि, दिन में वाहर जा सक्ता है रात में १०० कदम के भीतर संध्या को देखी हो वो ही जगह में जावे, धोती वदल कमली ओढ मुहपत्ति कमर में रख वगल में चरवला रख फासु पानी की प्रथम से याच-ना कर रखी हो उसमें से लेकर निर्जीव जगह में अणुजाणह जस्सगो" कह कर टट्टी जावे, और शुद्ध होकर उठने बाद

तीन वार " वो सिरे " कहे, पीछे पोषध शाला में आकर हाथ पग धोकर कपड़ा वदल के इरियावही करे पीछे गमणागमणे आलोउं ? इच्छं कहकर गमणागमणे का पाठ पढे पोषधशाला से जव निकले तव आवस्सही कहे, और पीछा आवे उस वक्त निसिही कहे ।

माथे कमली डालनेका काल ।

आसाढ सुदी १४ से ६ घड़ी तक कार्त्तिक सुद १४ तक और वाद में फागुण सुदी १४ तक चार घड़ी, और आसाढ सुदी १४ तक दो घडी तक काल है रात को कमली ओढनी चाहिये किंतु दिन में भी सूर्योदय वाद और सूर्यास्त पहिले उपरोक्त काल तक कमली ओढ कर वाहर निकलना चाहिये ।

अचित्त पानी का काल ।

आसाड सुदी १५ से कार्त्तिक सुदी १४ तक चूले से उतरे वाद तीन प्रहर तक अचित रहे, कार्त्तिक सुदी १४ से फागुण सुदी १४ तक चार प्रहर का काल, और वादमें आषाढ सुदी १४ तक पांच प्रहर तक पानी अचित रहता है. पीछे रुचित होता है, इस लिये उस पानी को पीने के काम में नहीं लेना किंतु हाथ धोने को वा रात में टट्टी जाने को

चाहिये तो उस काल पहिले चूना डालना. चाहिये, और पानी सफेद होवे इतना डालना, चूना डाला हुआ पानी २४ प्रहर तक अचित्त रहता है पोषध मे जो पानी रह जावे उसमें समय पूरा होने पर चूना न डाले तो दश उपवास का दंड आता है, इस लिये रात को जितना पाणी चाहिये इतना रखे उसमें चूना डालना, दूसरा परठव देना।

पोषध में पानी घी की माफिक वापरना और चूना का पानी अवश्य रखना चाहिये शरीर का भरोसा नहीं और रात मे टट्टी जाना पड़े तो पानी विना असूची रहे टट्टी रोके तो रोग होवे और असूची रखने से अघोरी पंथ का दूषण लगे और जैन धर्म महा पवित्र है इस लिये पानी अवश्य रखना किंतु विवेक से वापरना।

उपयोगी बातें।

विधि मे जहां इरि-शब्द आवे वहां पर इरियावही तस्स उत्तरी अनत्थ उस्ससिएणं लोगस्स का काउसग्ग समझना।

लोगस्सचंदे सुनिम्मलयरा तक काउसग्ग में गिनना प्रगट में पूरा कहना।

समय थोडा हो तो हाथ से पोसह उचरले और पीछे गुरु के पास पाठ उचरे उस वक्त " उपधि पडिलेहुं " वहां तक

मव आदेश मांगना, यह विधि राइ मुहपत्ति पडिलेहे उस पहिले करनी ।

पडिलेहण दो पग पर बैठ कर करनी, जीव जंतु प्रकाश में बैठ कर बराबर देखना, और उत्तरासण धोती बदलते समय न पहरना, वस्त्र अलग रखना,

काजा बराबर लेने से एक आंबिल का लाभ होता है, पोसह के १८ दोष पांच अतिचार और सामायिक के ३२ दोष छोडना चाहिये.

१ मुहपत्ति, २ चरवलो, ३ आसन, ४ धोती, ५ सूतका कंदोरा, ६ उत्तरासण, ७ मात्रा करने जानेका वस्त्र, ८ नासिकाकामल का वस्त्र ।

रात्रि के पोसह के अधिक उपकरण।

(१) कमली उनकी जाडे में २ उष्णता में १ उत्तर पट्टा सूतका, रुइके कुंडल, डंडासण, चूनेका पानी, टट्टी के लिये लोटा, और भी जो उपयोगी हो वो ले लेना—

"पोषध के १८ दोष" न लगाना।

(१) उपयोग पूर्वक फासु पानी लाकर पीये या वाष-उपयोग न रखे तो दोष.

(२) पोसह के लिये अच्छा स्निग्ध आहार न बनाना.

(३) „ न पारना मे बनवाना

(४) „ शरीर में विभूषा न करनी.

(५) पोसह में भूषण न पहरना. (६) वस्त्र न धूलाना.

(७) पोसह के लिये वस्त्र रंग के शोभायमान न वनवाना.

(८) पोषह में शरीर का मेल नहीं उतारना.

(९) पोषह में दिनमें. वा पोमिसी पढाये विना न सोना.

(१०) „ स्त्री कथा न करनी. (११) आहार कथा व

(१२) राजवा युद्ध कथा न करनी. (१३) देश कथा न करनी.

(१४) विगा पूंजे पडिलेहे लघु नीति वा वडी नीति न परठवनी. (१५) पर निंदा न करनी. (१६) संसारी मनुष्यों से विकथा न करनी उपयोग से बोलना. (१७) पोसह में चौरोंकी वार्त्ता न करनी. (१८) पोसह में स्त्रियोंके अंगोपांग न देखने.

पोषध के पांच अतिचार जान कर छोड़ना।

(१) शय्या, संथारा की जगह अच्छी तरह देखना।

(२) „ „ प्रमार्जना करना

(३) लघुनीति टट्टी की „ देखना

(४) „ „ प्रमार्जना करना

(५) विधि पूर्वक पोषध क्रिया करना, पाप व्योपार वपारणाकी चिंता न करे।

ऐसी पांच बात समझ के उनमें दोष न लगाना।

आवश्यक सूचना ।

विद्या प्रेमियों से प्रार्थना है कि राजपूताना पंजाब युक्त प्रदेश दक्षिण तथा बंगाल आदि प्रदेशों मे हिन्दी भाषान्तर युक्त जैन ग्रंथों की बड़ी आवश्यक्ता दीख पडती हैं क्योंकि गुजरात काठियावाड़ आदि प्रदेशों में तो गुजराती में भाषा-न्तर किये हुए जैन ग्रंथ प्राय: बहुत छप के प्रसिद्ध हो चुके हैं लेकिन उपरोक्त प्रदेशों में गुजराती भाषांतर के ग्रंथ पूरे तोर से काम में नहीं आ सक्ते इस लिये इस कार्य को पूरा करने के हेतु श्रीमान माणक मुनि जी महाराज ने कई जैन ग्रंथों का सरल हिंदी भाषान्तर किया है और कर रहे हैं, जिनमे से कितनेक तो मुद्रित हो चुके हैं, और कितनेक छप रहेहैं, अब जो ग्रंथ छप रहेहैं उनमें से मुख्य **श्रीपालचरित्र** है जिसकी महत्वता तो प्रत्येक जैनी से छिपी हुई नही है, जिसके प्रति वर्ष दो दफा श्री नव पद जी महाराज की ओलि-यों में साधु साध्वी श्रावक श्राविका अवश्य पढते हैं और सुनते हैं वो ग्रंथ मूल रास और सरल हिन्दी भाषान्तर के साथ छप रहा है अनुमान २५० पृष्ठ का बड़ा ग्रंथ होगा, कागज सफेद

बढ़िया लगाया गया है ताकि पुस्तक बहुत समय तक ठहर सके, लेकिन खेद के साथ यह भी प्रगट करना जरूरी है कि आजकल कागज का भाव द्विगुण त्रिगुण होगया है इसलिये पुस्तक छपाने में खर्च बहुत जियादा पड़ता है और इसी कारण से पुस्तक मूल्य भी जियादा पड़ता है, लेकिन उक्त मुनि महाराज की आज्ञापालन करने के हेतु अग्रिम मूल्य देने वाले ग्राहकों के लिये केवल रु० १।) ही रक्खा गया है, छपने के पश्चात् मूल्य रु० २) होंगे, डाक व्यय दोनों दशा में पृथक् लगेगा इसलिये महानुभावों से निवेदन है कि ऐसा सुअवसर हाथ से न जाने दें.

कार्त्तिक कृष्ण प्रतिपदा
संवत् १९७३ विक्रमे:

विनीत निवेदक,

सौभागमल हरकावत.

(२) मिलने का पता उपरोक्त सिवाय

आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मंडल,

रोसन मुहल्ला आगरा.